द्वितीय अध्याय :

" डॉ. रामगोपाल शर्मा " दिनेश " : व्यक्तित्व और कृतित्व "

डॉ. रामगोपाल शर्मा " दिनेश " का आधुनिक भारतीय साहित्यकारों मे प्रमुख स्थान है। हिन्दी की सभी साहित्यिक विधाओं में सफलता प्राप्त करनेवाले आधुनिक साहित्यकार के रूप में आप परिचित है। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य की सभी विधाओं में सफल हो गयी है। " प्राय : यह देखा जाता है, कि अधिक लिखनेवाले साहित्यकारों की सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय नहीं बन जाती, किन्तु डॉ. "दिनेश " की विशेषता यह है, कि वे जो कुछ भी लिखते है, एक विशेष स्तर पर साधनारत रह कर ही लिखते है,[१]" डॉ. पालीवाल का यह कहना है। साधनारत रहकर साहित्य सृजन करने के कारण " डॉ. दिनेश " काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना, अनुसंधान, पाठालोचन और बाल साहित्य आदि सभी क्षेत्रमें सफलता प्राप्त कर गए हैं।

परिवार तथा जन्म :

डॉ. दिनेश जी के पूर्वज भरतपूर के महाराजा के आश्रित थे। उसके पहले वे सीकर राज्य के निवासी थे। पं. गंगाप्रसाद मिश्र अपनी कार्य कुशलता से महाराजा के मंत्री बने। महाराजा की ओर से उन्हें पांच गांवों की जागीर मिली। १८५७ के स्वाधीनता विद्रोह तक उनकी जागीर थी, जो विद्रोह के बाद अंग्रेज राज्य में सम्मिलित हो गयी। इसी जागीरपर जीवन चलानेवाले पं. कन्हैयालाल मिश्र के घरपर ५ जुलाई १९२९ इ. के दिन सिंधावली (बाह आगरा) में डॉ. दिनेश जी का जन्म हुआ।

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य संचेतना – सं. प्रकाश आतूर पृ. ११

शिक्षा और साहित्य सृजन :

हिन्दी संस्कृत में एम. ए. करेनके पश्चात आगरा विश्वविद्यालय से आपने "हिन्दीकाव्य में निर्यातिवाद " विषयपर प्रबंध लिखकर पी. एच.डी की उपाधि पाई है। साथ ही डी. लिट, एल. टी., तथा साहित्य रत्न आदि उपाधियाँ भी आपको मिल चुकी है।

बचपन से ही आप साहित्य सृजन की ओर आकर्षित हुए है। म. गाँधी के सत्य और अहिंसा का प्रभाव आपपर अधिक है। इसी नैतिकता को आपने अपनी कविता का विषय बनाया है। निराशा, हार, क्लान्ति तथा मनुष्य को कमजोर बनानेवाली बात आपको बिलकुल पसन्द नही है।

आपकी साहित्यिक यात्रा का प्रारंभ स्वाधीनता संग्राम के साथ हुआ है। १४ साल की आयु में ही राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत, चुनौती भरी कविता आपने लिखी थी -

" आजादी के महासमर की
बजती है रणभेरी
बन्धन किसको आज अप्रिय है ?
देखें बेडी बोझ किसे है ?
किस को मातृभूमि की चिन्ता
आजादी से प्रेम किसे है ?
नव विहान लाने सन्देश का
देखे कौन ज्योति बनता है ?
धरती अम्बर कम्पित करती
बजती है रण-भेरी। "[१]

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य संचेतना - पृष्ट १६-१७

इससे स्पष्ट है, कि दिनेश जी की रचना में राष्ट्रीयता एक अंग है। आपकी सारी रचनाएँ देश की चिन्ताओं के इर्द गिर्द निर्माण हो गई है।

भारतीय स्वाधीनता के अग्रणी महात्मा गांधी के प्रति आपके मनमें अपार आकर्षण है। गांधी के अहिंसा मे विश्वास होने के कारण आप विज्ञान के हिंसात्मक रूपसे नाराज है। ज्ञान और धन की उचित उपयोगिता के बारे में एक कवि लिखते हैं-

" धिक है ऐसी दौलतपर ,
जो दुर्जन कर दें सज्जन को।
लानत है ऐसी पदवीपर ,
जो मिट्टी कर दें जीवन को। "

डॉ. दिनेश जी इसके अनुरूप धन तथा ज्ञान की उचित उपयोगिता को महत्व देते हैं। विज्ञान के बढते हुए फैलाव और उससे निर्मित विघातक साधनों का परिणाम देखकर आत्मालोचन में आप लिखते है - [१]

" आज का मनुष्य सर्वत्र आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता और परम्परागत संस्कारों से एक साथ जूझता हुआ नंगा और शोषित मिलता है। उसके साथ विराट प्रकृति का छायावादी सौन्दर्य भी है और नितान्त अकेलेपन की भयावहता भी। कही वह बौना बनकर अस्तित्व की छाया से डरता मिलता है, तो कहीं उसी बौनेपन में असीम शक्तियों का साक्षात्कार करता हुआ वैज्ञानिक उपलब्धिओं की विभीषिकाओं से संघर्षरत भी देखा गया है ----। "

" ------ आधुनिक युग का सबसे बडा जीवन संघर्ष वैज्ञानिक अविष्कारों की प्रति द्वंद्विता में निहित हो गया है। यह प्रतिस्पर्धा मानव जिजीविषा पर विषैला धुआं बनकर छा गई है। जीवन का समस्त रस सूखता जा रहा है ----। "

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य संचेतना - पृष्ठ १७ - १८

" वह विज्ञान घातक है, जो मिट्टी के घरों को नष्ट करता है और चन्द्र मंगल पर मनुष्य को पहुँचाने मे अपनी सफलता मानता है। "

" विज्ञान से स्पर्धा सुरु हुयी है, जीवनाविषयक दृष्टि परिवर्तित हुयी है। " युध्द रहित पृथ्वी ", दिनेश जी का सबसे प्रिय और सार्वकालिक सपना है।"

दिनेश जी की इन्हीं भावनाओं का चित्रण उनके साहित्य मे हो गया है। उनके साहित्यिक परिचय से ही उनका व्यक्तित्व देखना ठिक होगा।

डॉ. दिनेश : एक सफल कवि :

सन १९४३ ई. से आजतक अबाध गति से काव्य सृजन करनेवाले एक सफल कवि के रूप में डॉ. दिनेशजी सर्वपरिचित है। आधुनिक हिन्दी कविता को समृध्द बनाने का कार्य आपने किया है। आप अब तक छायावादी, प्रकतिवादी तथा नई कविता के रूपमें कई रचनाए लिख चुके है। आपकी कविता गीत, मुकाक, प्रबंध, खण्डकाव्य और महाकाव्य सभी रूपमें मिलती है। आज तक आपके १३ काव्य संग्रह ३ खण्डकाव्य और १ महाकाव्य प्रकाशित हो गये है। वे इस प्रकार -

काव्य संग्रह :

१) कविशाला , (१९४६)
२) वीरागंना , (१९४८)
३) विश्वज्योति बापू, (१९५०)
४) संघर्षों के राही, (१९५१)
५) सर्वोदय के गीत, (१९५८)
६) मधुरजनी,
७) जलती रहे मशाल,
८) आयाम , (१९६२)

९) लहर गाती है ,

१०) जयघोष ,, (१९६२)

११) स्म गंधा ,

१२) गौरवगान ,

१३) अहं मेरा गेय , ।

खण्डकाव्य :

१) दुर्वासा ,

२) उत्सर्ग ,

३) हिमप्रिया ,।

महाकाव्य :

१) सारथि , ।

इतनी विशाल संख्या में आपका काव्य साहित्य आज प्रकाशित है। आपको " मधुरजनी " राजस्थान सरकार का प्रौढ साहित्य पुरस्कार ५००) का मिला है। तो " स्मगंधा " पर राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिला है।"सारथि " महाकाव्य आपको प्रसाद की पंक्ति मे बिठाता है। राजस्थान अकादमी का १०००) का काव्य पुरस्कार इसी महाकाव्य पर मिला है।

दिनेश जी की काव्य रचनाओं पर हिन्दी के विभिन्न विद्वानों ने जो विचार व्यक्त किये है, उन्हें जान लें तो " दिनेश " जी का सफल कवित्व अपने आप सामने आयेगा।

डॉ. दिनेश शोषित जीवन के सही यथार्थ और उससे उत्पन्न आक्रोश के चित्रकार है। डॉ. दिनेश की कविता में व्यक्त प्रगतिवादी विचारों के बारे में डॉ. महेन्द्र भटनागर लिखते हैं - " सर्वहारा वर्ग की गहन पीडा को हृदय में

छिपाए हुए शोषण के विरुध्द गत ३० वर्षों से आवाज लगानेवाले डॉ. दिनेश भारत के उन प्रगतिशील कवियों में से एक है , जिन्होंने शोषित जनता के अधिकारों की केवल वकालत ही नहीं की है, बल्कि स्वंय उनके जीवन की भूमिकापर खडे होकर अनुभूतियों का संचय भी किया है। "[१]

डॉ. दिनेश अपने समकालीन जीवनपर टीकाटिप्पणी करते समय वर्तमान से खुद को अलग रखकर एक कॉमैन्टेटर की तरह कार्य करते है। संघर्षमय जीवन का चित्र आपके " संघर्षों के राही " में मिलता है। इसके बारे में हरिवंशराय बच्चन लिखते हैं - " वर्तमान से जो असंतोष, भविष्य की जो कल्पना आज हमारे स्वस्थ युवकों के हृदयमें जाग्रत है, उसका एक सजब प्रतिबिंब मुझे "संघर्षों के राही" की रचनाओं में मिला इसके रचयिता दिनेशजी स्वंय संघर्षों में पले और बढे हुए है। वे अपने प्राणों का साहस और बल देश व समाज को देकर उसे नई दिशा की ओर ले जाना चाहता है। " [२]

डॉ. दिनेश जी को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार दिलानेवाली रचना " मधुरजनी " के बारे में डॉ. भगीरथ मिश्र लिखते है - " मधुरजनी " संग्रह मे दिनेश जी ने अपनी जीवन , प्रकृति और अध्यात्म सम्बन्धी अनुभूतियों को व्यक्त किया है। वैसे यह कृति छायावादी गीत काव्य की परम्परामें आती है और इसको पढनेपर ऐसा लगता है, जैसे हम उसी युग के वातावरण में विचरण कर रहे है। "[३]

डॉ. दिनेश जी के गीत सरल और बोधगम्य है उसमें गेयता है, जो सहजता से गाये जाते हैं। आपकी कवितामे छायावाद, प्रगतिवाद और नई कविता की प्रवृतियाँ दिखाई देती है। आपके कवित्व की सफलता " सारथि " महाकाव्य में दिखाई देती है। अत: " सारथि " महाकाव्य का परिचय पाना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य संचेतना - पृ. २६
२) वहीं , पृ. २७
३) वहीं, पृ. २०

आधुनिक युग का श्रेष्ठ महाकाव्य: सारथि:

डॉ. दिनेश व्दारा लिखित पौराणिक आख्यानपर आधारित "सारथी" महाकाव्य एक सफल रचना है। श्रध्दा और मानव के आरंभिक जिवन का चित्रण प्रसादजी ने कामायनी मे किया है, तो "सारथि" में वही कहानी आगे बढायी है। अर्थात श्रध्दा और मानव के जीवन का उत्तरार्ध सारथि में है।

इसकी कथा ग्यारह सर्गों में विभाजित है। प्रथम दो सर्गो में शिवशक्ति का पर्यालोचन है। तृतीयसर्ग में त्रिपुर कथा का विवेचन है। चतुर्थ सर्ग मे मानव की कर्तव्य, विमुखता, व्याकुलता और श्रध्दा के मार्गदर्शिका स्प का विश्लेषण है। पंचम सवर्ग में भानव और बुध्दि के एकसाथ विचरण करने, मानव के मोहग्रस्त होने, आकाश भ्रमण तथा ग्लानि और पश्चात्ताप से विगलित होने का वर्णन है। षष्ठ सर्ग मे त्रिपुर की रचना और सप्तम सर्ग में श्रध्दा चेतना का प्रकाशन त्रिपुर के विनाशार्थ देवाराधना करने की सूचना है। अष्टमसर्ग में देवताओं द्वारा शिव की स्तुति का वर्णन है। नवम् सर्ग में श्रध्दा मानव को प्रगति का सन्देश देकर उसकी विकलता को नष्ठ करके उसे धैर्य प्रदान करती है। दशम सर्ग मे त्रिपुर संहार और अंतमे मानव मूल्यों - सत्यम् - शिवम् - सुन्दरम् का स्पष्टीकरण है।

कामायनी में मानवता के जनक मनु की कथा है, तो सारथि में स्वंय मानव का इतिवृत है। पौराणिक इतिवृतात्मक के आधारपर त्रिपूर स्मक की विराट कल्पना करके आज के युग के संघर्षमय जीवन की समसामयिक व्याख्या "सारथि" में दिनेशजी ने की है।"[१] इसमें जीवन के शाश्वत मूल्यों - सत्यम् - शिवम् - सुन्दरम् का अनुसरण करने और इच्छा - ज्ञान - क्रियादि प्रवृत्तियों के समन्वय पर बल दिया है।

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य -संचेतना - पृ. ४६.

" सारथी " महाकाव्य मे वर्तमान जीवन के लिए सन्देश है। आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों की सृजन परम्परामें सारथि एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।"[१] हिन्दी के विभिन्न विद्वानों ने सारथी महाकाव्य की प्रशंसा की है "[२] आचार्य विश्वनाथ प्रसाद के अनुसार - " यह रचना साम्प्रतकी हिन्दी काव्य धारा की उच्चस्तर रचनाओं में से एक है। इसमें कवि का अन्तर्वेश सहज और प्रविष्णु रूप में अभिव्यक्त हुआ है। " डॉ. रामचरण महेन्द्र के मतमें - " सारथि " महाकाव्य भावना और विचारणा का प्रौढ और सशक्त काव्य है , विश्व के श्रेष्ठ काव्यों से इसकी तुलना की जा सकती है। " डॉ. हरिदत्त पालीवाल के अनुसार "आस्था श्रध्दा, विश्वास एवं जीवंत पौरूष का यह शाश्वत काव्य नि:संदेह "कामायनी" के पश्चात् हिन्दी जगत् की एक महान उपलब्धि है। "

इसप्रकार डॉ. दिनेश जी ने हिन्दी कविता को अत्यंत समृध्द बनाया है। अत: आप हिन्दी के एक सफल कवि है।

नाटककार : डॉ. दिनेश :

डॉ. दिनेश जी के मनमें बचपनसे ही नाटक के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। स्कूली जीवन में ही अभिनय करना तथा नाटक का निर्देशन करना यह आपका कार्य रहा है। आपके प्रारंभिक दो नाटक अभिनय तथा निर्देशन को महत्व देकर ही लिखे गये है। आपके मनमें भारतीय समाज को सुधारने की भावना है। अपने नाटकों द्वारा भारतीय इतिहास के वीर पुरूषों का तथा कल्पना के सहारे योजनाओं को कार्यरत करनेवाले कुछ आदर्श चरित्रों का चित्रण किया है। इन चरित्रोंद्वारा भारत की कई समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया है। आपके इस कार्य को भारत सरकारने पुरस्कृत भी किया है। सामाजिक नाटक " लोक देवता जागा " पर भारत सरकार का ७५०) का नाटक पुरस्कार आपको मिला है। अभी तक आपके निम्न नाटक प्रकाशित हुए है -

---

१) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महाकाव्य - डॉ. देवीप्रसाद गुप्त पृ. २२३-२४
२) डॉ. दिनेश " रामगोपाल शर्मा: व्यक्ति और साहित्य डॉ. पृथ्वीराज पालीवाल - पृ. ८-२४.

१) सोमनाथ , (१९५५)
२) धरती का देवता,
३) लोक देवता जागा,
४) पृथ्वीराज, (१९६३)
५) सदानीरा, (१९६५)
६) कुणाल,
७) एकादशी,

एक सफल कवि होते हुए डॉ. दिनेश एक अच्छे नाटककार भी है। " सोमनाथ " भारतीय इतिहास को चित्रित किया है जिसमें भारतीय राजाओं के दंभ, अभिमान, वैमनस्य और विगठन की प्रवृत्ति के कारण विश्वविख्यात गुजराथ का सोमनाथ मंदिर कैसे लुटेरों का शिकार बनता है, यह स्पष्ट किया है।"धरती का देवता " मे मानव की महत्ता को स्पष्ट किया है। " लोक देवता जागा " मे शोषित समाज को अन्याय के विरूध्द लढने के लिए जाग्रत किया है। उसकी मुक्ति का संन्देश दिया है। " पृथ्वीराज " एक शुध्द ऐतिहासिक नाटक है। इतिहास के द्वारा आधुनिक समस्याओंपर इसमें प्रकाश डाला है। " सदानीरा " में सदानीरा इत आदर्श नारी पात्र के द्वारा समाजके भ्रष्ट, मूल्यहीन तथा दिशाहीन जीवन के दु:खो को नष्ट करके सदाचार के सफल जीवन का विवेचन किया है। आपले नाटक रंगमंच के साथ उद्देश्य की दृष्टि से महत्त्वपुर्ण है। इसीलिए मैने " पृथ्वीराज " नाटक को विवेचना का विषय बनाया है। जिसमे नाटककार दिनेश की सफलता आपके सामने आयेगी।

<u>एकांकीकार : डॉ. दिनेश :</u>

डॉ. दिनेश जी नाटक के समान एकांकी सृजनमें भी सिध्दहस्त हैं। आजतक आपने लगभग ५० एकांकी नाटकों का निर्माण किया है। इनमें से कुछ एकांकी " द्रोण के शिष्य " और " शान्ति के प्रहरी " इस एकांकी संग्रह मे और शेष

रचनाएँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी कई एकांकियों का प्रसारण आकाशवाणी से भी हुआ है। अर्थात् आप एक एकांकीकार के रूप मे भी आकाशवाणी के द्वारा जन जन तक पहुँच गये है।

उपन्यासकार : डॉ. दिनेश :

डॉ. दिनेश जी ने उपन्यासो के द्वारा भारतीय ग्रामीण तथा शोषित समाज का यथार्थ चित्रण करके उनकी समस्याओं पर प्रकाश डाला है और उन्हें नई दिशा दिखाई है। अभीतक आपके तीन उपन्यास प्रकाशित हुए है। आपका पहला उपन्यास " राह और रोशनी " ग्रामीण जीवनपर लिखा है। आपका दूसरा उपन्यास " शेषनाग के किनारे " समाज मे आतंक फैलानेवाली दस्यु प्रवृत्ति और उससे उत्पन्न समस्यापर प्रकाश डालता है।"बदलती रेखाएँ " इस उपन्यास में स्वाधीनता के बाद भी समाज मे चलनेवाली जमींदारी प्रथा तथा किसानों का शोषित जीवन आदि का चित्रण करके उन्हें पुरानें मुल्यों से मुक्ति दिलाकर नये मूल्यों की ओर आगे बढने का सन्देश दिया है। अर्थात जमीनदार और साहूकार की अपेक्षा सरकारी योजनाएँ – बँक , सहकारिता आदि जीवन के लिए कैसे उपयुक्त है। इसका सुन्दर चित्रण किया है।

कहानीकार : डॉ. दिनेश :

डॉ. दिनेशजीने १९५१ इ. से आजतक अनेक कहानियाँ लिखी है। जो समय समयपर भिन्न भिन्न पत्र पत्रिकाओं से प्रकाशित हो गयी है। प्रकाशित कहानियाँ ४० बताई जाती है, आज आपका एकमात्र कहानी संग्रह " चौराहे का आदमी " उपलब्ध है। आपकी कहानियों मे सामाजिक उत्पीडन को शब्द देने का कार्य हुआ है। समाज में व्याप्त दु:खों को समाज के सामनें रखने का कार्य आपकी कहानियाँ करती है।

BAR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

बाल साहित्य के निर्माता : डॉ. दिनेश :

हिन्दी मे बाल साहित्य का निर्माण बहुत कम हुआ है। डॉ. दिनेश अपने बाल साहित्य के कारण बालकों मे बहुत प्रिय है। आपको राज्य शिक्षा विभाग द्वारा बाल साहित्यपर राजस्थान सरकार की ओर से " हम धरती के लाल " किताबपर पुरस्कार मिला है। " नई चेतना नई योजना " और " बच्चों के बापू " आपकी लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

आलोचक : डॉ. दिनेश :

डॉ. दिनेशजी एक साहित्कार के साथ एक आलोचक के रूपमें भी सराहनीय कार्य कर गए हैं। अब तक आपकी कई आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हो गयी है। जिनमें प्रमुख है –

१) हिन्दी काव्य में नियतिवाद
२) हिन्दी शिवकाव्य का उद्भव और विकास,
३) सुरति मिश्र का अज्ञात काव्य ,
४) मिमांसा और मूल्यांकन ,
५) शोध और समीक्षा
६) साहित्य के नये संदर्भ ,
७) मीरा : जीवन और काव्य ,
८) कामायनी का नया अन्वेषण ,
९) सुरतिमिश्र का काव्यशास्त्र
१०) खडीबोली के प्रतिनिधि काव्य,
११) काव्यालोचन ,
१२) हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहास,

१३) वृन्दावनलाल और उनकी "मृगनयनी",

१४) हिन्दी साहित्य की परम्परा,

१५) लोकरुचि और साहित्य,

१६) प्रेमचन्द और उनका "गोदान" आदि।

डॉ. दिनेश ने इतनी विपुलसंख्या मे आलोचनात्मक साहित्य रचा है। आपका यह आलोचनात्मक साहित्य उच्च कोटी का है। "हिन्दी काव्य मे नियतिवाद" पर पीएच्. डी. की उपाधि और "हिन्दी शिवकाव्य : उद्भव और विकास" पर डी. लिट. तथा उत्तर प्रदेश सरकार का विशेष तुलसी पुरस्कार आपको मिला है। इस आलोचना के साथ साथ आपने मध्ययुगीन २१ अज्ञात ग्रंथों का पाठालोचन करके बडे परिश्रम से उसका सम्पादन भी किया है। जिनमें प्रमुख ग्रंथ है –

१) सुरति मिश्र का भक्तिविनोद ,

२) सोमनाथ का शशिनाथ विनोद।

<u>पत्रकार : डॉ. दिनेश:</u>

डॉ. दिनेश एक कवि और लेखक के साथ साथ पत्रकार के रूपमे भी कार्यरत रहे। १९४५ इ. से अबतक वे कई पत्रिकाओं का कार्य संभाले है। दैनिक "सैनिक" साप्ताहिक "आर्यमित्र" और मासिक "विशाल भारत" के आप सहसम्पादक बनकर कार्य किया है। "भदावर भारती", "सरस्वती", "संवाद", तथा "समीक्षालोक" के प्रधान सम्पादक भी आप कुछ दिन थे। कई पत्र पत्रीकाओ के परामर्शी मण्डल मे आपने कार्य किया है।

<u>भाषावैज्ञानिक : डॉ. दिनेश:</u>

डॉ. दिनेश जी को भाषाविज्ञान में बडी रुचि है आजकल आप "राजस्थान भाषिकी अनुसंधान अकादमी" के अध्यक्ष है। इस संस्था के द्वारा आप भारतीय विभिन्न

भाषाओं और बोलियों का सर्वेक्षण और अनुशीलन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। आपकी भाषा विज्ञान पर लिखी दो किताबें आज प्रकाशित हुई है ।

१) हिन्दी भाषा और उसका इतिहास,

२) अपभ्रंश भाषा : व्याकरण और साहित्य।

इन सब को छोडकर दिनेश जी की और कुछ रचनाएँ मिलती है - " वीर शिरोमणि शिवाजी " , " साम्ययोगी विनोबा एवं आचार्य कृपलानी ", नया सपना : नया गांव ", " गाँधी बनूँगा ", " काव्य त्रिवेणी ", "धूमकेतु" आदि। पुरस्कारों पर साहित्यिक संस्था तथा सामाजिक संस्थाओंने आपका अभिनंदन किया है। विशिष्ट साहित्य कार के रूपमे राजस्थान साहित्य अकादमी ने तो राष्ट्रीय स्तर के आधुनिक कवि के रूपमे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संमेलन मे आपको सम्मानित किया है। प्रथम विश्व हिन्दी संमेलन के समय आप राजस्थान के प्रतिनिधी थे. तो द्वितीय विश्व हिन्दी संमेलन के समय विशेष प्रतिनिधि के रूप में आप मॉरिसस की यात्रा कर चुके हैं। कई राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक एवं भाषा सम्बधी संस्थाओं से आपका संबंध है।

डॉ. दिनेश जी के साहित्य के बारे मे आचार्य सीताराम चतुर्वेदी लिखते हैं - " निराशा ने जगत के जिन मानवीय उपकरणो को, मानवीय उदात्त प्रवृत्तियों को जर्जर बना दिया है। उन्हें फिर से शुध्द और उद्‌बुध्द करके विनाशकारी तत्वो का विनाश करके लोकमंगलकारी तत्वों की सृष्टि करने और अपनी शक्ति को पहचान कर अपनी समृध्दि करने की प्रेरणा दिनेश जी की रचनाओं में पूर्ण रूपसे व्याप्त है। " [१]

डॉ. दिनेश आज सुरवाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूपमें सेवा रत है। इसके पहले आपने पदव्युत्तर शासकीय महाविद्यालय अजमेर में

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य - संचेतना - पृ. २७

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

हिन्दी अध्यापक के नाते कार्य किया है। हिन्दी अध्यापन के साथ ही आपकी लेखनी हमेशा कार्य रत है।

" जीवन की आधी शती पार कर जाने के पश्चात् भी डॉ. दिनेश एक मात्र ऐसे विश्वविद्यालयीय हिन्दी विभागाचार्य है , जो निरंतर रचना धर्म का पालन करते हुँए पत्र - पत्रिकाओं मे अपना कृतित्व प्रकाशित करते रहते हैं तथा पुस्तकाकार लेखन भी अविराम चला रहे है। आजकल आप हिन्दी साहित्य के इतिहास का पुनर्लेखन कर रहे है तथा सामयिक संदर्भों पर एक महाकाव्य लिखने में भी व्यस्त हैं।"[१] ऐसा डॉ. पृथ्वीराज पालीवाल लिखते हैं।

डॉ. " दिनेश " रामगोपाल शर्मा हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के बहुमुखी प्रतिभा के सफल साहित्यकार हैं।

---

१) समकालीन संदर्भों की काव्य - संचेतना पृ. १३

.....